



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'भारतीय विज्ञान परंपरा की पुनःस्थापना'

शालिनी मिश्रा

शोध छात्रा

शिक्षाशास्त्र विभाग,

म.ग.का.वी.पी. , वाराणसी

ABSTRACT

भारतीय विज्ञान परंपरा विश्व की सबसे समृद्ध परंपरा थी। हमारे देश ने उस समय विकास किया, जब पूरा पश्चिमी समाज अंधकारमय स्थिति में था, तब भारत पूरे विश्व में सोने की चिड़िया के रूप में चमक रहा था। भारत में विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधान हुए। भारत ने वैज्ञानिक अवधारणाओं और प्रौद्योगिकियों के विकास को जन्म दिया। भारत विज्ञान में उन्नत होने के साथ-साथ वाणिज्य और विज्ञान में भी उन्नत था। किसी भी समाज एवं राष्ट्र के उन्नयन का मूल आधार शिक्षा में सन्नहित है। भारतीय संदर्भ में यह काफी व्यापक और जटिल भी है। प्राचीन काल से ही शिक्षा के केंद्र के रूप में भारत विख्यात था। भारत में स्थापित नालंदा एवं तक्षशिला जैसे शिक्षा के केंद्र के रूप में भारत विख्यात था। भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी भारत ने एक नए युग का विकास किया, जिसने भारत को विश्व में ज्ञान के मामले में सबसे आगे रखा। भारत ने विश्व के सामने "वसुधैव कुटुंबकम" की अवधारणा भी रखी जो कि पूरी दुनिया को एक परिवार के समान समझता है। भारत में विज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिक सामाजिक, राजनैतिक, कृषि, शिक्षा आदि का भी विकास अपने उन्नत स्थिति में था। भारत ने प्राचीनकाल में, एक अद्वितीय समाज की स्थापना विश्व के सामने रखी। भारत की ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे समृद्धसाली, वैभवशाली तथा विकासशील परंपरा थी।

संकेत शब्द - प्राचीन भारतीय विज्ञान परंपरा।

प्रस्तावना

भारतीय समाज और संस्कृति के विकास में प्राचीन भारत से ही विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत दुनिया का एक उन्नत देश रहा है। हमारे देश में चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, रसायन विज्ञान, धनुर्वेद, पशु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, यंत्र विज्ञान, विमान विज्ञान, मनोविज्ञान, स्वप्न विज्ञान आदि विषय की शिक्षा दी जाती थी। यह विद्याएं अपने उन्नत स्थिति में थे जब विश्व ने विभिन्न विषयों के नाम भी नहीं सुना

था, भारत में उपरोक्त विषयों का अध्ययन अध्यापन तथा अन्वेषण हो रहा था। विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत दुनिया में अपना विशेष स्थान रखता था। हमारे देश में चिकित्सा विज्ञान के चरक संहिता, और सुश्रुत संहिता, जैसे महान ग्रंथों की रचना हुई, तब लोग शव परीक्षण करते थे। प्लास्टिक सर्जरी करना भी जानते थे।

प्राचीन भारत में महान गणितज्ञ, खगोलविद् हुए। आज सारे संसार में प्रचलित शून्य और दशमलव भारत की देन है। प्राचीन भारत के उन्नत धातुकर्म का साक्षात् सबूत दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट खड़ा करीब 16 सौ साल पुराना लौह स्तंभ है। जिस पर अभी तक जंग नहीं लगी है। कृषि कर्म के साधन, वास्तु कला और विविध शिल्प व्यवसायों के मामलों में भारत दुनिया में उच्च स्थान रखता है।

भारत का प्राचीन खगोल विज्ञान अत्यंत उन्नत अवस्था में था। खगोल विज्ञान भारत की देन थी। भारतीय खगोल विज्ञान का उदभव वेदों से माना जाता है। वैदिक कालीन भारतीय धर्म परायण व्यक्ति थे। कोई भी शुभ कार्य विशेष ग्रह नक्षत्रों में करते थे। ज्योतिष विज्ञान, पंचांग, ग्रह नक्षत्रों आदि का विस्तृत ज्ञान भारत में मिलता है, उतना अन्य कहीं नहीं मिलता। सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण आदि की गणना हमें पंचांग के अनुसार कर सकते हैं। वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की गणना भी हम पंचांग के अनुसार कर सकते हैं और वह वैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार सटीक बैठती है।

ज्योतिष विज्ञान का प्रारंभ यज्ञों की प्रक्रिया के सुचारू रूप से निष्पादित करने के लिए और धार्मिक उपासना को व्यवस्थित करने की दृष्टि से हुआ था। ज्योतिष के अंतर्गत नक्षत्र, राशि, ग्रहण का ज्ञान, समय का विभाजन, दिशा दूरी का विभाजन, आदि विषय पढ़ाए जाते थे। ये सब विषय नक्षत्र ज्योतिष या गणित ज्योतिष के थे। उत्तरवर्ती काल में फलित ज्योतिष का भी विकास हुआ। इसमें नक्षत्रों की गणना के अनुसार शुभ-अशुभ नक्षत्र, भविष्य-कथन आदि की गणना की जाती थी।

प्राचीन काल में भारतीय आचार्य आर्यभट्ट ने अनेक सिद्धांत की खोज की। गणित के क्षेत्र में भी भारतीय विज्ञान परंपरा अत्यंत उत्तम किस्म की थी। माप-तौल की प्रणाली विकसित थी। यजुर्वेद में दस खरब तक की संख्याओं का वर्णन है। भारत गणित के क्षेत्र में भी आगे था। प्राचीन भारत में गणित का अध्ययन बहुत ऊँचे स्तर पर था। ज्योतिष के साथ गणित का घनिष्ठ संबंध था। भारतीय गणितज्ञों ने शून्य की संख्या और दशमलव पद्धति का भी अविष्कार किया था। प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, श्रीधराचार्य, भास्कराचार्य, आदि थे।

ऋषि कणाद ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व ही इस बात को सिद्ध कर दिया था, कि विश्व का हर पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बना है। कणाद का परमाणु सिद्धांत विश्व में सबसे पहले आया हुआ परमाणु सिद्धांत है। उन्होंने एक परमाणु की तरह अणु या छोटे अविनाशी कणों के अस्तित्व का अनुमान लगाया।

अभियंत्रण तथा वास्तुकला क्षेत्र में भारत सिंधु घाटी सभ्यता से ही अग्रणी स्थान रखता था। भारत में मूर्ति, मंदिरों की एक उन्नत श्रृंखला थी। पहाड़ काटकर बनाया गया कैलाशनाथ मंदिर अभियंत्रण एवं वास्तु कला का उन्नत नमूना है। भारत की वास्तुकला अत्यंत उच्च कोटि की थी। मंदिरों का निर्माण नागर शैली एवं बेसर शैली में किया जाता था। दक्षिण के कुछ मंदिर वास्तुकला के अप्रतिम उदाहरण हैं। जैसे पद्मनाभ मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, अम्मान मंदिर आदि।

प्राचीन भारत के स्मारकों एवं शिलालेखों में भारतीयों के असाधारण कौशल युक्त उच्च कोटि के अभियांत्रिकी ज्ञान के प्रमाण प्राप्त होते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त अध्यापक अपने निवास स्थानों पर छात्रों को वास्तविक स्थापत्य, शिल्प, चित्रकला एवं संगीत आदि की शिक्षा प्रदान किया करते थे। विशेष कलाओं तथा शिल्पों का प्रशिक्षण कार्यशाला में दिया जाता था। शिक्षार्थी बालक बहुधा शिल्पियों से संबंध कर दिए जाते थे।

भारतीय वास्तु की विशेषता प्राचीन मंदिरों की दीवारों के उत्कृष्ट और प्रचुर अलंकरण में है। भित्ति चित्रों और मूर्तियों की योजना, जिसमें अलंकरण के अतिरिक्त अपने विषय के गंभीर भाव भी व्यक्त होते हैं। भवन को बाहर से कभी कभी पूर्ण भाव भी व्यक्त होते हैं। भवन को बाहर से कभी कभी पौराणिक गाथाएं अंकित होती दिखती हैं। पौराणिक वास्तु में मंदिर, महल, भवन, गुफाओं आदि के उत्कृष्ट नमूने दिखाई देते हैं। जो कि विश्व में इतने प्राचीन समय में कहीं नहीं दिखते हैं। भारतीय वास्तु की पूरे विश्व में अपनी एक अलग ही पहचान है। वर्तमान में भी इतने सुंदर नक्काशीदार मंदिरों का निर्माण नहीं हो पाया जैसा हमारे प्राचीन काल में हुआ जोकि आज तक संरक्षित है। भारतीय वास्तु का स्वर्ण युग प्राचीन समय ही माना जाएगा क्योंकि उस समय के मंदिर के जैसे मंदिर का निर्माण आज तक ना हो सका।

आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है। जो कम से कम 5000 वर्षों से अधिक भारत में प्रचलित है। आयुर्वेद विज्ञान की वह शाखा है, जिसने मानव शरीर को निरोग रखना, रोग मुक्त करना, एवं आयु बढ़ाने से है। आयुर्वेद प्राचीन काल से ही रोगों को दूर करने में कारगर चिकित्सा पद्धति रही है। हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव शरीर का विधिवत अध्ययन कर इस प्रकार से वर्णन किया कि आधुनिक विज्ञान भी उन्हें पढ़कर हतप्रभ हो जाता है। उन्हें गलत सिद्ध नहीं कर सकता। यह पढ़कर भी आश्चर्य होता है कि उन्होंने शरीर में हड्डियों की संख्या, नाड़ियों की संख्या आदि के सटीक विवरण प्रस्तुत किए हैं। हमारे ऋषियों द्वारा पृथ्वी पर ऋतुओं, वर्षा, पंचमहाभूत आदि का विस्तृत विवरण किया है। जो की मंत्रों और श्लोकों के माध्यम से लिपिबद्ध है। भारतीय चिकित्सा के जनक कहे जाने वाले चरक पहले ऐसे चिकित्सक थे जिन्होंने अपनी पुस्तक में पाचन, चपापचाय और प्रतिरक्षा तंत्र की संकल्पना प्रस्तुत की थी।

आयुर्वेद को अष्टांग कहा गया है। अर्थात् इसकी 8 शाखाएं हैं - शल्य, शालक्य, काया चिकित्सा, भूत विद्या, कौमारभृत्य, अंगन्दत्र, रसायन और वाजीकरण। आयुर्वेदिक दवाओं की घटक वनस्पतियों की पहचान और खासकर भस्म-निर्माण की समय-साध्य और श्रमसाध्य पद्धति लुप्त हो चुकी है। भस्म बहुत कारगर औषधि के रूप में इस्तेमाल होते थे।

प्राचीन भारतीय शिक्षण में पशु विज्ञान की भी शिक्षा का समुचित प्रबंध था। युद्ध में उपयोग होने वाले पालतू पशुओं के स्वरूप गुण तथा प्रशिक्षण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जाता था। प्राचीन समय में पशुओं की संख्या बहुत अधिक थी। जनसामान्य में भी पशुओं को पालने की प्रवृत्ति भी थी। पशुधन को श्रेष्ठ समझा जाता था। पशुविज्ञान और पशुचिकित्सा संबंधी अनेक ग्रंथों की रचना भी हुई थी। जिसमें पालिकाप्य का 'हस्त्यायुर्वेद', नारायण का मातंगलीला प्रमुख था। पशुओं के रोगों की चिकित्सा का अच्छा प्रबंध था। इन सब तथ्यों से स्पष्ट है कि प्राचीन समय में पशु विज्ञान और पशु चिकित्सा समुन्नत अवस्था में थी और इनकी शिक्षा का अच्छा प्रबंध रहा होगा।

प्राचीन साहित्य में वनस्पति विज्ञान के उल्लेख बहुदा उपलब्ध मिलते हैं। वनस्पतियों का उपयोग चिकित्सा के लिए तो होता ही था, वन उपवन कृषि की दृष्टि से भी वनस्पति विज्ञान का अध्ययन अनिवार्य था। भारतीय वैज्ञानिकों ने वनस्पतियों में जीवन के अस्तित्व को जान लिया था। भारतीय वैज्ञानिकों को वे क्रियाये भी जानते थे जिससे बिना ऋतु के भी पुष्प-फल आदि को विकसित किया जा सकता था। फलों का अधिक संख्या में और अधिक बड़े आकार में प्राप्त किया जा सकता था।

प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न यंत्रों और उपकरणों का भी वर्णन है। यंत्र चलित खिलौनों के भी उल्लेख मिलते हैं। अनेक यंत्र युद्ध उपयोगी थे, और अनेक यंत्र वाहनों का संचालन भी करते थे। यंत्रों में अलौकिक शक्ति होती थी। महाराज भोज यंत्र विज्ञान के विलक्षण विद्वान थे, इस विषय पर इन्होंने अनेक ग्रंथ लिखे।

विमान भी एक प्रकार का यंत्र चलित वाहन है। प्राचीन ग्रंथों में विमानों के उल्लेख मिलते हैं। भरद्वाज ने 'यंत्र सर्वस्व' ग्रंथ के वैमानिक प्रकरण में तीन प्रकार के विमानों का वर्णन किया है। विमान को विशेष लेप लगाकर

अदृश्य भी किया जा सकता था। यह शास्त्र सज्जित भी हो सकते थे। इनका संचालन संभवतः पारद से होता था। इस विद्या की शिक्षा का भी प्रबंध प्राचीन काल से ही भारत में था।

प्राचीन काल में रसायन विज्ञान में भी अनेक खोजे हुई थी। रसायनों का प्रयोग उद्योगों में होता था। इस विद्या का प्रचुर विकास हुआ था। रसायन विज्ञान भारतीय विद्यालय में शिक्षा का एक प्रमुख विषय था। रसायन विज्ञान का उपयोग चिकित्सा शास्त्र में भी प्रमुख रूप से किया जाता था।

मनोविज्ञान की भी शिक्षा का महत्वपूर्ण विषय था। प्राचीन साहित्य में मनोविज्ञान के संबंध के संकेत मिलते हैं। चिकित्सा ग्रंथों में मनोरोगों की चिकित्सा के प्रसंग विद्यमान हैं। दार्शनिकों ने मन का विशेष अध्ययन किया था। भगवान कृष्ण का कथन है कि मन चंचल एवं प्रमाथि है, बलवान है, दृढ़ है। उसका निग्रह अति कठिन है।

प्राचीन भारत में स्वप्न विज्ञान का अध्ययन भी किया जाता था, तथा इस विषय की शिक्षा भी दी जाती थी। सपनों के माध्यम से भूत, भविष्य, वर्तमान का बोध होता था। इनके द्वारा मनुष्य के मानसिक स्थिति को भी जाना जा सकता है।

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि, एक लोक कल्याणकारी शिक्षा पद्धति थी। इसमें ज्ञान, विज्ञान, आध्यात्म सभी का समावेश था। यह जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ थी। प्राचीन शिक्षणालयों में, गुरुकुल में विद्याध्ययन के साथ छात्र के चरित्र निर्माण का भी उपदेश दिया जाता था। गुरुकुल में गुरुजनों के साथ शिष्यों का निरंतर संपर्क होने से गुरुओं के संस्कारों शिष्य ग्रहण करते थे।

प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित थी। गुरुकुल की गुरु केंद्रित शिक्षा में गुरु बच्चों को केवल किताब पढ़कर अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर लेते थे, वे बच्चों को होमवर्क ना देकर रोजमर्रा की परिस्थितियों को सामने रखकर उनकी तार्किक और व्यवहारिक बुद्धि को ताड़ते थे और व्यवहारिक अध्ययन व ज्ञानार्जन का वातावरण तैयार करते थे। इसलिए ज्ञान नीरस व बोझिल नहीं था, मार्गदर्शक था। जैसे निशाना साधने के लिए मछली की एक आंख सिर्फ एक कार्य नहीं था, यह लक्ष्यपूर्ति और एकाग्रता का व्यवहारिक सबक था। उसमें ज्ञान विज्ञान, गणित, न्याय, दर्शन, कौशल विकास ज्ञान, खेलकूद व युद्ध कला के साथ शास्त्रार्थ अर्थात् तर्क निर्माण पर भी ध्यान दिया जाता था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी प्राचीनकाल की शिक्षा व्यवस्था निम्नलिखित बिंदु को सम्मिलित किया गया है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में नीति तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व-स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के उच्च प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों विद्वानों को लाभान्वित किया था। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, पतंजलि, गौतम पिंगला,

शंकरदेव, मैत्री, गार्गी और थिरुवल्लुवर जैसे अनेकों महान विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, और शल्य चिकित्सा, सिविल, इंजीनियर, भवन निर्माण, नौकायन, निर्माण और दिशा ज्ञान, योग, सिविल इंजीनियरिंग, भवनों का निर्माण, ललित कला, शतरंज, इत्यादि में प्रमाणिक रूप से मौलिक योगदान किए। भारतीय संस्कृति और दर्शन का बड़ा प्रभाव रहा है। वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने की जरूरत है बल्कि शिक्षा व्यवस्था द्वारा उस पर शोध कार्य होने चाहिए और नए नए उपयोग भी सोचे जाने चाहिए।

आज शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। उसमें तकनीकी और रोजगार परक शिक्षा का प्रसार एवं विस्तार प्रमुख है। इस शिक्षा पर बल दिए जाने के दो प्रमुख आधार हैं - एक तरफ जहां विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों के कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा की आवश्यकता बढ़ रही है वहीं दूसरी विज्ञान और तकनीकी विधियों ने उत्पाद से संबंधित प्रत्येक कार्य को अनेक भागों में विभाजित कर दिया है। इन कार्यों को तकनीकी, वैज्ञानिक, एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त विशेषज्ञ व्यक्ति ही कुशलतापूर्वक कर सकते हैं। वर्तमान युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। इस युग में किसी भी राष्ट्र एवं उसकी जनता की समृद्धि, कल्याण, वैभवता तथा सुरक्षा मुख्यतः विज्ञान व तकनीकी के विकास पर निर्भर करती है। विज्ञान व तकनीकी दृष्टि से विकसित राष्ट्रों के नागरिक ही सुखी और समृद्धि से परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जबकि विज्ञान व तकनीकी दृष्टि से पिछड़े राज्य के अधिकांश नागरिक दिन-हीन ढंग से जीवनयापन कर रहे हैं। वास्तव में राष्ट्र के भौतिक व मानवीय संसाधनों का उचित ढंग से उपयोग करके राष्ट्र को प्रगति के उच्च शिखर पर आसीन किया जा सकता है। वर्तमान समाज में मानव का व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन विज्ञान व तकनीक के विकास प्रभाव से अछूता नहीं है। यदि भारतीय प्राचीन विज्ञान के तकनीकी एवं विज्ञान की महत्वपूर्ण अन्वेषण को शामिल करके विकास के पथ पर हम आगे बढ़ सकते हैं।

निष्कर्ष--

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता में से एक भारतीय सभ्यता में विज्ञान और तकनीक पारंपरिक रूप से शामिल रहे हैं। साधु-संतों की भूमि होने के साथ-साथ प्राचीन भारत विद्वानों और वैज्ञानिकों का भी घर था। अध्ययन से पता चलता है कि, भारत दुनिया को गिनती सिखाने से लेकर दुनिया की सर्वोत्तम स्टील बनाकर सदियों पहले से विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे रहा था। प्राचीन समय में भारतीय ने कितने ही प्रमेय और तकनीकों की खोज की थी। जिसके कारण आधुनिक विज्ञान और तकनीक को आधार मिल सका।

निसंदेह विभिन्न विषयों के अध्ययन अध्यापन एवं अन्वेषण से हम यह जान सकते हैं, कि प्राचीन भारत में विज्ञान उन्नत स्थिति में था तथा प्राचीन भारत में लगभग भारत तकनीकी तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर विश्व गुरु के रूप में संपूर्ण विश्व का नेतृत्व करता था। प्राचीन भारतीय विज्ञान के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की। आदिमानव ने विभिन्न प्रकार के उपकरण बनाए। हमारे यहां इस प्रकार का विज्ञान और तकनीकी थी कि हम प्रकृति का पूरा संतुलन बनाकर रखते थे हम कोई भी कार्य प्रकृति के विरुद्ध नहीं करते थे। आज जो पर्यावरण असंतुलन हमें दिखाई दे रहा है यह आज के विज्ञान की देन है। आज जो ग्लोबल वार्मिंग हो रहा है। ओजोन परत का क्षरण हो रहा है, यह सब पाश्चात्य विज्ञान की देन है। हम ऐसी तकनीक का विकास कर रहे हैं जो कि प्रकृति के अनुकूल नहीं है। यदि हम भारतीय विज्ञान के तहत तकनीकी और प्रौद्योगिकी का विकास करें तो जो पर्यावरण असंतुलन बना है। उसे हम दूर कर सकते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं की ज्ञान और विज्ञान की जितनी समझ प्राचीन काल में हमारे ऋषियों को थी, ज्ञान

और विज्ञान की उतनी समझ हमारे आज के वैज्ञानिकों को नहीं है। भारतीय विज्ञान को यदि पुनः स्थापित किया जाए तो पर्यावरण असंतुलन को हम कम कर सकते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भी भारत को ज्ञान के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में विकसित करना है, जो प्राचीन भारतीय इतिहास से काफी प्रेरित है। भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए हमें इस क्षेत्र में काफी शोध की आवश्यकता है, तथा अनुसंधान करके उपयोगी साधनों की खोज करके इसे बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

मुख्य रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा की अनेक विधाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा विभिन्न नामों के साथ उनका प्रयोग भी किया जाता रहा है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वैज्ञानिक, औद्योगिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के वर्तमान दौर में प्राचीन शिक्षा के मानव निर्माण के आदर्शों को ध्यान में रखकर शिक्षा पद्धति का क्रियान्वयन किया जाए। ताकि शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की भारतीय परंपरा के अनुरूप पूर्ति हो सके। यह सत्य है कि वर्तमान समय में भारत के प्राचीन वैज्ञानिक परंपरा को उसी प्राचीन रूप में ग्रहण करना और उपयोग में लाना शिक्षाविदों की दृष्टि से संभव नहीं है, तथापि इसके गुणों विशेषताओं को किसी न किसी रूप में वर्तमान शिक्षा पद्धति में शामिल किया जाना लाभप्रद होगा। भारतीय विज्ञान परंपरा की पुनःस्थापना के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची--

1. कपूर, श्यामनारायण, प्राचीन भारत में विज्ञान और शिल्प, साहित्य निकेतन, कानपुर 1998, पृष्ठ
2. शर्मा, के, प्राचीन भारत में विज्ञान, पृष्ठ 4
3. कुमार, कृष्ण, प्राचीन शिक्षा पद्धति, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, पृष्ठ 232
4. सत्यप्रकाश, वैज्ञानिक विकास परंपरा, पृष्ठ 93
5. अल्टेकर, (1976), प्राचीन भारत में शिक्षा, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई.
6. गुप्ता, एस. पी. (2008), भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
7. मुखर्जी, आर.के. (1951), प्राचीन भारतीय शिक्षा, मिलान एंड के., मुम्बई.
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020